SHODH SAMAGAM

ISSN : 2581-6918 (Online), 2582-1792 (PRINT)

संचार माध्यमों की चुनौतियाँ

आभा मिश्रा, हिन्दी विभाग,
शास. के. आर. जी. महाविद्यालय, ग्वालियर, मध्यप्रदेश, भारत

ORIGINAL ARTICLE

Corresponding Author :
आभा मिश्रा, हिन्दी विभाग,
शास. के. आर. जी. महाविद्यालय, ग्वालियर,
मध्यप्रदेश, भारत

shodhsamagam1@gmail.com

Received on : 09/01/2020
Revised on : -----
Accepted on : 16/01/2020
Plagiarism : 01% on 09/01/2020

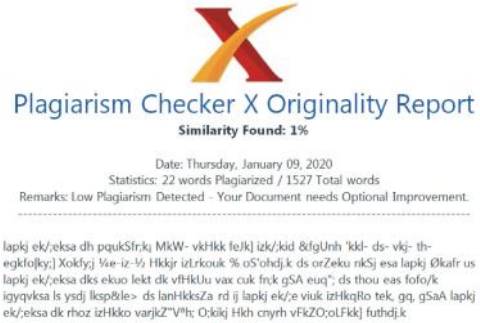
Plagiarism Checker X Originality Report
Similarity Found: 1%

Date: Thursday, January 09, 2020
Statistics: 22 words Plagiarized / 1527 Total words
Remarks: Low Plagiarism Detected - Your Document needs Optional Improvement.

lapkj ek/;eksa dh pqukSfr;k¡ MkW- vkHkk feJk] izk/;kid &fgUnh 'kkl- ds- vkj- th- egkfojky;] Xokfy;j ¼e-iz-½ Hkkjr izLrkouk % oS'ohdj.k ds orZeku nkSj esa lapkj Økafr us lapkj ek/;eksa dks ekuo lekt dk vfHkUu vax cuk fn;k gSA euq"; ds thou eas fofo/k igyqvksa ls ysdj lksp&le> ds lanHkksZa rd ij lapkj ek/;e viuk izHkqRo tek, gq, gSaA lapkj ek/;eksa dk rhoz izHkko varjkZ"V°h; O;kikj Hkh cnyrh vFkZO;oLFkk] futhdj.k

प्रस्तावना :–

वैश्वीकरण के वर्तमान दौर में संचार क्रांति ने संचार माध्यमों को मानव समाज का अभिन्न अंग बना दिया है। मनुष्य के जीवन में विविध पहलुओं से लेकर सोच–समझ के संदर्भों तक पर संचार माध्यम अपना प्रभुत्व जमाए हुए हैं। संचार माध्यमों का तीव्र प्रभाव अंतर्राष्ट्रीय व्यापार भी बदलती अर्थव्यवस्था, निजीकरण आदि पर स्पष्ट दिखाई देता है। संचार माध्यमों के समक्ष जहाँ एक ओर सूचनाओं, ज्ञान, मनोरंजन आदि के प्रसार के लिए अब समूचा विश्वपटल सहज उपलब्ध है। वहीं एक तरफा संचार जनसमुदाय की वैचारिक ऊर्जा को जकड़ रही है। व्यापार जगत हो या भाषाई अस्मिता का प्रश्न अथवा अनंत सूचनाओं का प्रवाह, ये सभी संचार–संसाधनों के कार्य को चुनौतीपूर्ण बनाते हैं।

मुख्य शब्द :–

संचार, माध्यम, ऊर्जा।

आज जनसंचार माध्यमों ने एक अलग संचार भाषा विकसित की है। 'यह भाषा न हिन्दी है, न अंग्रेजी है और न कोई अन्य भाषा है। इनकी भाषा है, बाजार की भाषा। संचार माध्यम विश्व बाजार के संदर्भ में एक नई भाषा का विकास करने की दिशा में अग्रसर हैं।'[1]

हिन्दी भाषा को संचार माध्यमों ने एक नये कलेवर में नये परिप्रेक्ष्य में प्रस्तुत किया है। हिन्दी के विस्तार और प्रसार का अत्यंत चुनौतीपूर्ण दायित्व संचार माध्यमों पर है। हिन्दी भाषा को वह किस रूप में प्रस्तुत करते हैं यह महत्व रखता है। हिंदी के साहित्यिक शब्दों को, सुंदर वाक्य–विन्यास में यदि प्रसारित किया जाता है तो वह लोकप्रिय होकर बोलचाल की भाषा में प्रचलित हो जाते हैं। हिंदी के

जनभाषा स्वरूप के साथ, साहित्यिक हिन्दी और हिन्दी की विविध बोलियों का लोकप्रिय बनाने का चुनौतीपूर्ण कार्य संचार माध्यम कर रहे हैं। संचार माध्यमों से उपजा 'वैश्वीकरण हिन्दी की नई संरचना के रूप को न केवल स्वीकृति का संकेत दे रहा है बल्कि उसको अपनाने के लिए अनुकूल माहौल प्रदान कर रहा है।'[2]

प्रतिपल परिवर्तित वर्तमान समय में संचार माध्यमों से भली भांति परिचित होना तथा इनका ज्ञान होना अनिवार्य हो गया है। नये बोध, नित नूतन सामग्री और नवीन रचनात्मकता को त्वरित गति से प्रस्तुत करना संचार माध्यमों के समक्ष अनेक चुनौतियाँ खड़ी करता है।

संचार के दोनों माध्यमों (मुद्रित और तकनीकी) में पत्रकारिता के नये आयाम स्थापित करना विगत दो दशकों में संचार माध्यमों के लिए बड़ी चुनौती रहा है। धर्म, अर्थ, राजनीति, कला, साहित्य, संस्कृति, उद्योग, प्रौद्योगिकी, स्वास्थ्य, फिल्म फैशन, अंतरिक्ष आदि संदर्भित तथ्यों से आज की पत्रकारिता परिपूर्ण है। यही कारण है कि संचार माध्यमों में अब पत्रकारों के लिए पत्रकारिता प्रशिक्षण अनिवार्य है।

संचार के इस युग में जनसामान्य के लिए विश्व के घटनाक्रमों से सम्पर्क करना सुलभ हो गया है। ऐसे में सूचनाओं की विश्वसनीयता चुनौती है क्योंकि एक भ्रामक, असत्य समाचार बड़े संचार माध्यमों की वर्तमान चुनौतियाँ का निम्न रूप में उभरकर सामने आती हैंः–

1. जनसंचार माध्यम जनसामान्य के लिए हैं ना कि वर्ग विशेष के लिए। अतः प्रसारित सामग्री की सत्यता की पुष्टि करना अनिवार्य है।
2. संदेशों की तीव्रतम गति विश्वव्यापी प्रभाव डालती है। अतः भ्रामक संदेशों से समाज में अव्यवस्था, अराजकता, विद्रोह की स्थिति आदि फैलने की आशंका बनी रहती है।
3. संचार माध्यमों का कार्य मात्र सूचना देना न हो बल्कि सही दिशा निर्देशन कार्य को भी यह चुनौती समझ कर पूर्ण करें।
4. शहरी क्षेत्र के साथ ग्रामीण क्षेत्रों एवं कृषि क्षेत्र के विकास कार्यक्रमों को भी बढ़ावा देना मीडिया की जिम्मेदारी है। अतः विकास कार्यक्रमों को समानता से महत्व देकर ग्रामीण अंचल की समस्याओं, आकांक्षाओं तथा जनजागृति संबंधी कार्यक्रमों का प्रसारण चुनौतीपूर्ण कार्य है।
5. संचार माध्यमों में लिखित और मौखिक दोनों ही स्तरों पर भाषा की वर्तनीगत शुद्धता एवं सहप्रयोगों का ध्यान रखना आवश्यक है। माध्यम की भिन्नता का भी विशेष ध्यान प्रस्तुतकर्ता को रखना आवश्यक है क्योंकि ध्वनि प्रधान, श्रव्य माध्यम में ''ऊपर दिया गया'' या ''निम्नलिखित'' जैसे शब्दों का प्रयोग हास्यापद होगा।
6. जनसंचार में फोटोग्राफी वह विधा है जिससे भाषा में आने वाली बाधाओं को इसके द्वारा दूर किया जा सकता हे। ''फोटो पत्रकार'' को हमेशा सदैव चुनौतियों का सामना पड़ता है। विपरीत स्थितियों, समस, सुविधा, साधन की परवाह किये बगैर ही उसे समय–सीमा में जल्द से जल्द तस्वीरें समाचार पत्रों को भेजनी होती है।'[3] दृश्य–श्रव्य दोनों ही संचार माध्यमों के पत्रकारों के समक्ष घटना के चित्र, वीडियो और ऑडिओ प्रतिफल उपलब्ध कराना चुनौतीपूर्ण कार्य है।
7. ''जनसंचार माध्यमों की उपयोगिता अलग–अलग स्थितियों तथा अलग–अलग संदर्भों में अलग–अलग हैं, किन्तु इन सभी माध्यमों का उद्देश्य तथा लक्ष्य एक ही है। समाज की शैक्षिक, सामाजिक, सांस्कृतिक तथा राजनीतिक धरोहर की वृद्धि करने तथा व्यक्ति के जानने व अभिव्यक्ति के मूलभूत अधिकार को अक्षुण्ण रखने की दिशा में''[4] संचार माध्यम अद्भुत क्षमता रखते हैं। संचार माध्यमों के समक्ष उक्त प्रसारणों से जुड़ी संवेदनशीलता अहम् चुनौती होती है।

8. संचार माध्यम शासकीय व स्वायत्त दोनों स्तरों पर संचालित है। अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता को आधार बनाकर विचारों का संप्रेषण चुनौतीपूर्ण होता है।

9. ग़ैर सरकारी संचार माध्यमों में निश्चित आचार–संहिता के अभाव में प्रसारण अनेक चुनौतीयों को जन्म देता है।

10. संचार माध्यम देश–विदेश की घटनाओं पर परिचर्चा, विश्लेषण आदि प्रस्तुत कर जन सामान्य का मत परिवर्तन करने की दिशा में बड़ी भूमिका निर्वहन करते हैं। अतः ऐसे में निष्पक्षता रखना चुनौतीपूर्ण है।

11. ''सत्य एवं न्याय की स्थापना तथा अनाचार, शोषण से मुक्ति की दिशा में ई–जर्नलिज्म की भूमिका असंदिग्ध हैं वह दिन दूर नहीं जब ई–जर्नलिज्म द्वारा सदाचरण का उद्घोष होगा एवं जन–शिक्षण, जन–जागरण तथा जनरंजन की त्रिवेणी पर इलेक्ट्रोनिक जर्नलिज्म का आधिपत्य होगा।''[5]

    अतः संचार प्रौद्योगिकी में ई–जर्नलिज्म के समक्ष असीमित क्षितिज चुनौतीपूर्ण है।

12. संचार माध्यमों ने विश्वग्राम की परिकल्पना को सच कर दिखाया है। इससे 'सांस्कृतिक और सामाजिक परंपराओं, मूल्यों और पक्षों को विस्तार मिला है'[6] राष्ट्र की मूल संस्कृति के संरक्षण व सवंर्धन की दिशा में ये एक चुनौतीपूर्ण कार्य है।

13. संचार माध्यमों में प्रिंट मीडिया के स्वरूप में वर्तमान में तेजी से बदलाव आया है। समाचार–पत्र, पत्र–पत्रिकाओं, पुस्तक आदि का प्रकाशन अब इण्टरनेट पर उपलब्ध है। ऑनलाइन पब्लिकेशन ने कागजी रूप में प्रकाशन और पाठक तक उपलब्धता को एक चुनौती बना दिया है।

14. **मीडिया प्रजातंत्र का चौथा स्तम्भ है। :** ''इण्टरनेट शासन के चौथे स्तम्भ की भूमिका को और भी प्रबलता से निभा सकता है''[7]। किन्तु यह कार्य अत्यंत चुनौतीपूर्ण है क्योंकि 'इण्टरनेट पर न तो कोई आंतरिक सेंसर है और ना कोई बाह्य सेंसर है।

वर्तमान में हिन्दी के कार्यक्रमों को विदेशों तक पहुँचाने में संचार माध्यमों में रेडियो की महत्वपूर्ण भूमिका है। बी.बी.सी. लंदन तक रेडियो के द्वारा हिन्दी कार्यक्रम अति लोकप्रिय रहे हैं। रेडियो का महत्व पुनः बढ़ता जा रहा है। मोबाइल, इण्टरनेट, सेटेलाइट द्वारा रेडियो के विभिन्न केन्द्रों के कार्यक्रम आज देश–विदेश के दूरदराज क्षेत्रों में सहज उपलब्ध हैं। रेडियो कार्यक्रमों को अधिक लोकप्रिय बनाने की दिशा में कार्यक्रमों में विविधता लाना आवश्यक है, जिसे एक चुनौती के रूप में लेना होगा।

ई–कॉमर्स ने संचार माध्यमों को एक नया बाजार चुनौती के रूप में दिया हैं जिसके द्वारा ग्राहक के समय और धन दोनों की बचत तो होती है। परन्तु विक्रय की जा रही वस्तु की गुणवत्ता और दाम के प्रति विश्वसनीयता बनाए रखना चुनौती है। ई–कॉमर्स द्वारा हिन्दी में विज्ञापन का प्रचलन तेजी से बढ़ा हैं 'आज हमें हिन्दी को आई.टी. की भाषा बनाने की चुनौती स्वीकारना होगी। सूचना एवं प्रौद्योगिकी तथा विज्ञान विषयक सामग्री को हिन्दी में देना होगा–पढ़ेगा कौन, इसकी चिंता किए बिना हिंदी को वैज्ञानिक अविष्कार की भाषा बनाना तथा वाणिज्य के अलावा विज्ञान और प्रशासन में उसे स्रोत भाषा के रूप में स्थान देना हमारी प्राथमिकता होनी चाहिए।'[9]

हिन्दी के प्रचार–प्रसार व विस्तार में संचार माध्यमों की भूमिका तब और चुनौतीपूर्ण हो जाती है जब वर्तमान में हिन्दी का संक्षिप्तीकरण, भूल हिन्दी के शब्दों का संक्रमित स्वरूप, मानक हिंदी के साथ मिलाकर वाक्य–विन्यास को मनमाने ढंग से प्रस्तुत किया जाना एक आम बात होती जा रही है। हिंदी भाषा के स्वरूप को उसकी शुद्धता को बनाए रखना संचार माध्यमों के समक्ष चुनौती है क्योंकि 'जनसंचार द्वारा विचारों, सूचनाओं, उत्प्रेरक संकेतों के आदान–प्रदान से ही हमारे समग्र जीवन–मूल्यों और संस्कृति की संरचना होती है। इस प्रकार संचार के मूल तत्व ही हमारे जीवन में स्थापित होते हैं।'[10]

निष्कर्ष :–

संचार माध्यमों द्वारा समाचारों का प्रकाशन और प्रसारण वर्तमान में संचार संसाधनों की विविधता और तेजी से वृद्धि के साथ उनकी विश्वसनीयता, सत्यता और प्रमाणीकरण की दिशा में पत्रकारों के कार्य को और अधिक चुनौतीपूर्ण बनाता जा रहा है। संचार माध्यमों में प्रयुक्त भाषा का बहुत महत्व होता है क्योंकि 'भाषा मात्र कुछ शब्द या उच्चरित ध्वनि मात्र तक सीमित नहीं है। भाषा यहाँ अपना अलग व्याकरण रचती है और अपने मूल रूप में ही प्रयोग होती है। यानि कि विचारों, भावनाओं, संवेदनाओं, सूचनाओं आदि के व्यापक जन समूह तक संप्रेषित करना। आधुनिक संचार माध्यमों के समक्ष जो जन समूह है वह किसी एक भाषा या संस्कृति का नहीं है।'[11]

सन्दर्भ सूची :–

1. *मीडिया लेखन एवं जनसंचार, डॉ. संजीव कुमार जैन पृ. 149, कैलाश पुस्तक सदन–भोपाल।*
2. *मीडिया कालीन हिन्दी, डॉ. अर्जुन चव्हाण, पृ. 39, राधाकृष्ण प्रकाशन दिल्ली।*
3. *सम्पूर्ण पत्रकारिता, डॉ. अर्जुन तिवारी, पृ. 402, विश्वविद्यालय प्रकाशन– वाराणसी।*
4. *मीडिया लेखन एवं जनसंचार, डॉ. संजीव कुमार जैन, पृ. 9, कैलाश पुस्तक सदन, भोपाल।*
5. *ई–जर्नलिज्म, अर्जुन तिवारी, पृ. 15 संजय बुक सेंटर, वाराणसी।*
6. *पत्रकारिता सिद्धांत और स्वरूप, डॉ. संजीव कुमार जैन, पृ. 24।*
7. *सूचना प्रौद्योगिकी और समाचार पत्र, रवीन्द्र शुक्ला, पृ. 93 राधाकृष्ण प्रकाशन–दिल्ली।*
8. *सूचना प्रौद्योगिकी और समाचार पत्र, रवीन्द्र शुक्ला, पृ. 93 राधाकृष्ण प्रकाशन–दिल्ली।*
9. *मीडिया कालीन हिन्दी, डॉ. अर्जुन चाव्हाण, पृ. 57, राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली।*
10. *हिन्दी पत्रकारिता के नव्य आयाम, डॉ. मंजुला सांगा, डॉ. सिद्धेश्वर कश्यप, पृ.10 जयभासी प्रकाशन–इलाहबाद।*
11. *मीडिया लेखन एवं जनसंचार डॉ. संजीव कुमार जैन, पृ. 149, कैलाश पुस्तक सदन– भोपाल।*

****